ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 142-143
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

मिथिलेश्वर के उपन्यास 'माटी कहे कुम्हार से' मुनिला का चरित्र : एक विश्लेषण

डॉ0 सुधा चौरसिया
सहायक अध्यापक– हिन्दी विभाग, कोआपरेटिव इण्टर कालेज, पिपराईच, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-02.03.2024, Revised-09.03.2024, Accepted-14.03.2024 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश: ***मिथिलेश्वर उन उपन्यासकारों एवं कहानीकारों में से है, जिसका रचनाकार्य अपनी मिट्टी से उपजे मानवीय यथार्थ से सुदृढ़ हुआ है। मिथिलेश्वर ने कुल सात उपन्यास लिखे– झुनिया, प्रेम न बाड़ी उपजै, माटी कहे कुम्हार से, यह अंत नहीं, सुरंग में सुबह, युद्धस्थल, तेरा संगी कोई नही। इन उपन्यासों में इन्होनें स्त्रियों के चरित्र एवं उनकी समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखा है और भारतीय महिलाओं की दयनीय और दुर्दशापूर्ण स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। हिन्दी साहित्य में सूर्यबाला, प्रभा खेतान, तस्लीमा नसरीन, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रामुद्गल, नासिरा शर्मा जैसी लब्ध प्रतिष्ठित लेखिकाओं ने नारी की उपेक्षा शोषण, नारी के प्रति हिसांत्मक व्यवहार आदि पर नारी मुक्ति के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से संघर्ष किया है। नारी की अस्मिता को पुरूष ने सदा पददलित किया है। डॉ0 आशारानी 'व्होरा के शब्दों में –''भारत की औसत नारी आज भी सामाजिक दृष्टि से उतनी ही पिछड़ी है। इसलिये तो यह अपने हितों और हकों से अनभिज्ञ है या हित स्वार्थ में नए प्राप्त हकों का दुरूपयोग करने लगी है।''[1]***

कुंजीभूत शब्द– रचनाकार्य, झुनिया, प्रेम न बाड़ी उपजै, माटी कहे कुम्हार से, यह अंत नहीं, सुरंग में सुबह, तेरा संगी कोई नही।

मिथिलेश्वर ने ग्रामीण नारी के जीवन के विभिन्न पहलुओं का बहुत करीब से देखा है। नारी की व्यथा, पीड़ा और दासता को देखकर भी व्यक्तिवादी खोह में छिपकर बैठने वाले मिथिलेश्वर नहीं है। उन्होंने ग्रामीण नारी के दुखी जीवन के विभिन्न आयामों को मुनिला के चरित्र द्वारा उद्घटित किया है। माटी कहे कुम्हार से उपन्यास नायिका प्रधान है। इसमें मिथिलेश्वर ने भारतीय समाज में उन सभी समस्याओं को उठाया हे। जिससे एक स्त्री का सामना रोज होता है। उपन्यास में रेखाकिंत समस्या नारी संघर्ष व शोषण से रची गई है। नायिका मुनिला की कहानी समाज के प्रति नारी के विद्रोह की कहानी है। मुनिला के चरित्र को लेखक ने अत्यंत प्रभावशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में ब्राह्मणी कलावती गूँगी है। गूँगी होने के कारण उसका विवाह में समस्या आती है। वह विशुनदेव यदुवंशी से प्रेम कर बैठती है और गर्भवती हो जाती है। कलावती के घर वाले अपने कुल के इज्जत के खातिर उसे जान से मारने की षड्यंत्र रचते है। जिस कारण विशुनदेव उसे रात में लेकर भाग जाता है। कलावती को गाँव से दूर एक झोपड़पट्टी में लेकर रहने लगता है। वही कलावती ने इस बच्ची मुनिला को जन्म दिया। कुछ दिनों बाद कलावती के घर वाले पता लगाकर धान काटती हुई कलावती एवं विशुनदेव की हत्या करा देते है। मुनिला उसी झोपड़पट्टी में लोगों के बीच बड़ी होती है और मुन्नीलाल से इसका विवाह हो जाता है। झबुरा गाँव के रिझावन साव की रक्षा करने में मुनीलाल की मृत्यु हो जाती है। उसके बाद मुनिला उसी गाँव के शिक्षक रमण के साथ बजरंगपुर गाँव में रमण के बाबा सुमेर सिंह के यहाँ चौका बर्तन करने लगती है। एक घटना के कारण सुमेर सिंह से मुनिला का शारीरिक सम्बन्ध बन जाता है। जिससे मुनिला गर्भवती हो जाती है। सुमेरसिंह का लोकलाज के डर से दिल का दौरा आने से मृत्यु हो जाती है। सुमेरसिंह की इस कायरता को देखकर मुनिला अपने हाथों ही अपना गर्भपात कर लेती है। इसी दौरान सुमेरसिंह का बनिहार शिवबचन मुनिला को डॉ0 रजिया रेहान के यहा भर्ती करा देता है। ठीक होने के बाद डॉ रजिया के यहाँ चौका बर्तन का काम करने लगती है, किन्तु अपने स्वाभिमान एवं निर्भीक्ता, ईमानदारी के कारण रजिया का जुल्म गरीब मरीजों पर होता देख मुनिला वहा काम छोड़कर रामप्रसाद के यहॉं काम पकड़ लेती है। वहॉं भी बेटे–बेटियों से साथ हो रहे भेद–भाव होता देख वहॉं छोड़कर मुकुल निवास में काम करने लगती है, वहॉं भी स्थिति कुछ भिन्न नही थी। मुकुल निवास के अत्याचार को देखकर मुनिला यहॉं से सेठ अमीरचंद के यहॉं काम करने लगी, वहॉं दुश्मनों द्वारा अमीरचंद के बेटे का अपहरण कर हत्या कर दी जाती है। उसके उपरान्त अमीरचन्द की पत्नी की खराब होती हालत मुनिला से देखी नहीं जाती।

यहॉं का काम भी छोड़कर वह एस0 के0 सिंह के यहॉं काम करने लगती है। यहॉं उनके अलावा उनकी पत्नी, पत्नी का भाई राजू (धीरज) राजू की पत्नी कलावती और एक लंगड़ा नौकर शामू रहता है। शामू का एक्सीडेंट हो जाता है। किन्तु एस0के0 सिंह के परिवार से शामू को देखने कोई भी अस्पताल नहीं जाता। मानवता के नाते और इनके परिवार के प्रति शामू की तत्परता को देखकर जब मुनिला मालकिन से किसी को अस्पताल जाने के लिए कहती है। तब मालकिन जबाब में बड़ी निर्दुरता से कहती है।''[2] यहा किसे फुर्सत है। मुनिला देख ही रही हो, सभी बिजी है। मालिक के विभाग के नेता, मन्त्री आज ही आ रहे है। वहॉं हमारे न जाने से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं जरूरत भर रूपये भिजवा दिए है। किन्तु मुनिला मानवता के कारण श्यामू से मिलने अस्पताल जाती है, उसकी सेवा करती है। उसके इनसानियत को देखकर शामू द्रवीभूत हो जाता है। और एस0के0 सिंह के घर की पूरी सच्चाई मुनिला से कहता है–''मालिक एस0के0 सिंह जिस विभाग के बड़े अफसर है। विभाग के नाम पर सरकारी खजाने को दोनो हाथों से लूट रहे है, उनके ऊपर जो नेता, मंत्री हैं सब इस लूट में मिले हुए हैं। सब मेल मिलाप से ही होता है।''[3] कुछ दिनों बाद धीरज शामू पर चोरी का इल्जाम लगाते हुए उसे जान से मार डालता है।

शामू की हत्या मुनिला बर्दाश्त नहीं कर पाती और सीधे जनहित सेवादल के कार्यालय पहुँच कर उस पार्टी की मदद से एस0के0 सिंह के यहॉं छापे मारी करवा देती है। इस पर एस0 के0 सिंह की पत्नी और सरहज कलावती मुनिला को व्यंग्य मारते हुये नमक हरात शब्दों को प्रयोग करती है, तो मुनिला निडरता एवं जागररूक्ता भरे स्वर में कहती है– ''सरकारी खजाना लूटकर और निरपराध नौकर की हत्या कर तेरा भला होगा। हम तो सॉंच के साथ हैं, तू ओर तेरा परिवार भोगेगा।''[4] मुनिला के इस कथन से स्पष्ट

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

होता है कि एक जागरूक महिला के साथ नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन करने में अपने जान तक की परवाह नहीं करती। मुनिला के इस हिम्मत के कारण वह रातोंरात ही पुलिस के साथ–साथ मीडिया कर्मियों की निगाहें और कैमरे उसकी और आकर्षित हो गये एक पत्रकार कहता है–

"गजब की साहसी है, एक दम बहादुर मुनिला।"[5]

इस पर 'जनहित सेवादल' के मुखिया गगनबिहारी मुनिला को अपनी चुनावी दॉवपेंच में मोहरा बनाकर उसका प्रयोग करना प्रारम्भ करते है, किन्तु धीरे–धीरे मुनिला को 'जनहित सेवादल' पार्टी का वास्तविक सच्चाई समझ में आने लगता है पार्टी द्वारा जब मुनिला को पार्टी पक्ष में झूठ बोलने के लिए कहा जाता है तो वह स्पष्ट कह देती है–"हमको जो बात खरी लगेगी दीदी हम वही कहेगी। लल्लो चप्पो तो हम जानती ही नहीं। बात बदलने से तो हमको मर जाना अच्छा बुझाता है।"[6] मुनिला के इस अन्तर्द्वन्द्व के माध्यम से लेखक ने राजनीति की स्वार्थपरकता, भ्रष्टाचार, कथनी करनी में अन्तर इत्यादि बिन्दुओं की तरफ इंगित किया है। सांसद विधायक, मंत्री चुनाव जीत कर अपने क्षेत्र का विकास नहीं करते, बल्कि कुर्सी पाते ही लूट–खसोट मचाते रहते है। जिससे देश का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। अंत में मुनिला एक रैली के दौरान मंच पर भाषण देना जैसे ही प्रारम्भ करती है। भीड़ को चीरती हुई दो गोलियॉ उसके छाती में मार दी जाती है, जिससे तुरन्त उसकी मृत्यु हो जाती है। सारे लोग उसके लाश के पास एकत्रित होकर अपनी व्यग्रता और बेचौनी को नारों में अभिव्यक्त करना प्रारम्भ करते है।"

अमर शहीद मुनिला
जिन्दाबाद–जिन्दाबाद
मुनिला के हत्यारों का पकड़ा जाये
साजिश का भंडा फोड़ हो भंड़ा फोड़ हो।"[7]

लेखक ने मुनिला के चरित्र के विषय में अवगत कराया है कि वह एक ईमानदार स्वाभिमानी निर्भीक और जागरूक महिला था अपने कर्तवयनिष्ठा के लिए वह किसी भी प्रकार का प्रलोभन का लाभ नही लेती अपने जीवन की अन्तिम सॉस तक उसने अपने सम्पर्क में आये। सभी लोगों के हक के लिये आवाज उठाया। गलत होते वह अपने ऑखों के सामने बर्दाश्त नहीं करती सदैव उसका प्रतिकार किया और इसी कारण से षड्यंत्र के तहत उसकी हत्या कर दी गई उसके चरित्र के विषय में अन्त रिजावन साव कहता है। "यह जैसी खरी और निभिझ थी इसका पति मुनीलाल भी वैसा ही खॉटी इन्सान था। गलत से समझौता करना तो इन दोनो ने जाना ही नही था। दोनों एक दूसरे के लिए मरे। मुन्नीलाल मेरे परिवार को बचाने के लिए अब मुनिला समाज के लिए। अपने अबतक के जीवन में मैने ऐसी जोड़ी नही देखी।"[8]

अतः हम कह सकते है कि मुनिला अत्यन्त साहसी, निर्भीक कर्तव्यनिष्ठ महिला थी, बचपन से ही लोगों की अपनी सार्म्थानुसार सहायता करती है। अन्याय होते अपने सामने वह बर्दाश्त ही नही करती बिना किसी संकोच के विरोध करती थी, मुनिला अपने कर्तव्य व मुल्यों पर अडिग खडी रहती थी। अन्याय के सामने घुटने टेकना उसने तो सीखा ही नहीं। उसके लिए भले ही अपना प्राण गवाने पड़े उसके लिए भी वह तत्परता के साथ सदैव खड़ी रहती थी। आज हमारे समाज को मुनिला जैसी सोच वाली मनुष्यों की जरूरत है तभी हमारे समाज एवं देश का उत्थान होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्होरा, आशारानी, 'भारतीय नारी दशा और दिशा' अपनी बात पृ 131.
2. मिथिलेश्वर 'माटी कहे कुम्हार से (2011) प्रथम संस्करण भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली पृ–401.
3. वही पृ0 401.
4. वही पृ0 403.
5. वही पृ0 428.
6. वही पृ0 433.
7. वही पृ0 445.
8. वही पृ0 509.

*****